पाठ 19. अपना-अपना काम

पाठ का उद्‌देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्‌देश्य बच्चों को प्रत्येक व्यक्ति के काम का महत्व समझाना है। इस कहानी द्‌वारा बच्चे समझ पाएँगे कि सभी व्यक्ति अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार ही काम करते हैं। उनका काम उन्हें छोटा या बड़ा नहीं बनाता।

पाठ का सारांश

अभयपुरी नगर के राजा अपने मंत्री तथा दो नाविकों को लेकर नौका विहार के लिए निकलते हैं। राजा और मंत्री आँखें बंद करके शीतल हवा का मज़ा ले रहे थे जिससे नाविकों को लगा कि वे दोनों सो रहे हैं। नाविकों ने एक दूसरे से कहा कि मंत्री जी भी तो राजा के सेवक हैं लेकिन ये आराम से लेटे हैं और हम धूप में पसीना बहा रहे हैं। राजा ने नाविकों की बातें सुन लीं। राजा ने नाव को किनारे लगाने का आदेश दिया तथा नाव से उतरकर इधर-उधर घूमने लगे। राजा को दूर से कुछ आवाज़ें आती हुई सुनाई पड़ीं। उन्होंने एक नाविक को बुलाकर इसका कारण जानना चाहा। इसका सही-सही पता लगाने के लिए नाविक को चार बार उस झोंपड़ी तक जाना पड़ा, जहाँ से आवाज़ें आ रही थीं। उसके बाद राजा ने मंत्री को भी इसी बात का पता लगाने के लिए भेजा। मंत्री जी ने यह काम एक ही बार में कर दिया। फिर राजा ने नाविकों को समझाया कि इस दुनिया में सबका काम महत्वपूर्ण है। अपनी योग्यता के बल पर कोई मंत्री बनता है तो कोई नाविक। दोनों नाविक राजा के कहने का अभिप्राय समझ चुके थे।

अध्यापन संकेत

पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों से पाठ का एक-एक अंश पढ़वाएँ। कहानी से मिलने वाली सीख के बारे में बच्चों से पूछें। उन्हें समझाएँ–

- ❖ हमें प्रत्येक व्यक्ति के काम और मेहनत की कद्र करनी चाहिए।
- ❖ समझाएँ, सभी प्राणी समान होते हैं कोई प्राणी छोटा अथवा बड़ा नहीं होता।
- ❖ बच्चों को समझाएँ, दूसरों से ईर्ष्या या चिढ़ रखना यह गलत आचरण है। इससे व्यक्ति कभी उन्नति नहीं कर पाता।
- ❖ उन्हें समझाएँ कि हमें अपने काम को ईमानदारी और लगन से करना चाहिए।
- ❖ पाठ के मूल भाव को भलीभाँति स्पष्ट करें।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्‌यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।